12

प्रत्यय स्वर

इस प्रत्यय स्वर के प्रकरण में प्रत्ययों के स्वर विषय में संक्षेप से कुछ विवरण किया है। वेद में उदात्तस्वर, अनुदात्तस्वर, और स्वरितस्वर ये तीन सामान्य स्वर विद्यमान हैं। उदात्त-अनुदात्त-स्वरित संज्ञा: अष्टाध्यायी में विहित है। वहाँ उदात्त संज्ञा विधायक पाणिनीय सूत्र उच्चैरुदात्त: है। अनुदात्त संज्ञा विधायक सूत्र नीचैरनुदात्त: है। स्वरित संज्ञा विधायक सूत्र 'समाहार: स्वरित:' है। वहाँ अनुदात्त स्वर के बोध के लिए; इस सङ्केत को स्वीकार किया है। स्वरित स्वर के बोध के लिए इति सङ्केत:। को स्वीकार किया है। किन्तु उदात्त स्वर के बोध के लिए इस प्रकार का कोई विशेष प्रयत्न नहीं किया है। इस पाठ में उदात्त स्वर की और अनुदात्त स्वर की आलोचना की है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- प्रत्ययों के स्वर विधान विषय को जान पाने में;
- अग्नि शब्द के नकार से उत्तर इकार का क्या स्वर है इस विषय में जान पाने में;
- पित् प्रत्ययों का क्या स्वर होता है यह जान पाने में;
- तद्धित प्रत्ययों का क्या स्वर होता है इस विषय में जान पाने में;
- सूत्रों का अर्थ निर्णय कर पाने में;
- सूत्रों की व्याख्या कर पाने में; और
- अनुवृत्ति आदि का ज्ञान प्राप्त कर पाने में।

टिप्पणियाँ

12.1 आद्युदात्तश्च (३.१.३)

सूत्र का अर्थ – प्रत्यय का आदि उदात्त ही हो।

सूत्र का अवतरण– प्रत्यय के आदि उदात्त विधान के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्र की व्याख्या– संज्ञा– परिभाषा– विधि– नियम अतिदेश और अधिकार छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह अधिकार सूत्र है। यहाँ दो पद विराजमान हैं। आद्युदात्तः च ये सूत्र में आये पदच्छेद है। आद्युदात्तः यह प्रथमान्त पद है, च यह अव्यय पद है। प्रत्ययः इस प्रथमा एकवचनान्त पद का यहाँ अधिकार आ रहा है। उससे सूत्र का अर्थ होता है – प्रत्यय का आदि उदात्त ही होता है।

उदाहरण–अग्निः। कर्तव्यम् इति।

सूत्र अर्थ का समन्वय– गत्यर्थक अगि धातु के इकार की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' इस सूत्र से इत् संज्ञक है, अतः यह धातु इदित् है। इसलिए ही इस धातु के इदित् होने से 'अङ्गेर्नलोपश्च' इस सूत्र से अगि धातु से परे प्रकृत सूत्र से नि प्रत्यय करने पर अग् नि इस स्थिति में सभी का संयोग करने पर 'अग्नि' इस स्थित्ति में शब्द स्वरूप के कृदन्त होने से 'कृत्तद्धितसमासाश्च' इससे उसकी प्रातिपदिक संज्ञा होने पर, और उसके बाद 'ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः परश्च' इसने अधिकार में वर्तमान से 'स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसांङ्योस्सुप्' इस सूत्र से खाले कपोत न्याय से इक्कीस स्वादि प्रत्ययों की प्राप्ति में प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय करने पर अनुनासिक होने से पाणिनीय की प्रतिज्ञा से उस उकार की 'उपदेशेऽजनुनासिकः इत्' इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर 'तस्य लोपः' इस सूत्र से इत् संज्ञक उकार का लोप होने पर 'अग्नि स्' इस स्थित्ति में संयोग करने पर अग्निस् इस शब्द स्वरूप के सुबन्त होने से उस सकार के स्थान में 'ससजुषोः रुः' इससे आदेश होने पर रु के उकार की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' इससे इत् संज्ञा में लोप करने पर 'अग्नि र्' इस स्थित्ति में रेफ उच्चारण से परे वर्ण अभाव के कारण 'विरामोऽवसानम्' इस सूत्र से अवसान संज्ञा होने पर उससे पूर्व रेफ के स्थान में 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' इस सूत्र से रेफ के स्थान में विसर्ग करने पर 'अग्निः' यह सुबन्त रूप सिद्ध होता है। अग्नि शब्द नि प्रत्ययान्त है। इसलिए प्रकृत सूत्र से नि प्रत्यय के इकार को ही उदात्त होता है।

विशेष– आद्युदात्त वह ही होता है, जो प्रत्यय संज्ञक है, उस नाम के प्रत्यय अधिकार में जो-जो पढ़े गए है, उस-उस शब्द का आदि स्वर उदात्त होता है।

12.2 अनुदात्तौ सुप्पितौ (३-१-४)

सूत्र का अर्थ– सुप् पित् प्रत्ययों की अनुदात्त संज्ञा होती है।

सूत्र का अवतरण– सुप् प्रत्ययों की और पित् प्रत्ययों के स्वर को अनुदात्त विधान के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्र की व्याख्या- संज्ञा- परिभाषा- विधि- नियम अतिदेश अधिकार छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इससे सुप्प्रत्ययों के और पित्प्रत्ययों के स्वरों का अनुदात्त विधान किया है। इस सूत्र में दो पद विद्यमान है। अनुदात्तौ, सुप्पितौ ये सूत्र में आये पदच्छेद हैं। जिसको उद्देश्य करके जो कुछ कार्य का विधान किया जाता है, वह कार्य उद्देश्य कहलाता है, अतः सुप्पितौ यह प्रथमा द्विवचनान्त उद्देश्य बोधक पद है। जिसका विधान किया जाता है, उसे विधेय कहते है, अतः अनुदात्तौ यह विधेय बोधक प्रथमा द्विवचनान्त पद है। यहाँ सुप्प्रत्यय को और पित्प्रत्यय को उद्देश्य करके अनुदात्त होने की विधि है। यहाँ सूत्र के पदों का अन्वय इस प्रकार है - सुप्पितौ अनुदात्तौ इति। उससे यह सूत्रार्थ प्राप्त होता है - सुप्प्रत्यय और पित्प्रत्यय अनुदात्त होते हैं।

उदाहरण- यज्ञस्यं। न यो युच्छति।

सूत्र अर्थ का समन्वय- रूढ़िपक्ष में यज्ञ शब्द की 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' इस सूत्र से उसकी प्रातिपदिक संज्ञा होती है, उसके बाद 'ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः परश्च' इनके अधिकार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसांङ्योस्सुप् इस सूत्र से इक्कीस प्रत्ययों की प्राप्ति में षष्ठी एकवचन की विवक्षा में ङस् प्रत्यय करने पर यज्ञ ङस् इस स्थित्ति में ङस् के ङकार की 'लशक्वतद्धिते' इस सूत्र से इत्संज्ञा करने पर 'तस्य लोपः' इस सूत्र से इत्संज्ञक ङकार के लोप करने पर यज्ञ अस् इस स्थित्ति में अदन्त प्रातिपदिक से परे अस स्थान में 'टाङसिङसामिनात्स्याः' इस सूत्र से स्य यह आदेश होने पर यज्ञ स्य इस स्थित्ति में सभी का संयोग करने पर यज्ञस्य यह रूप सिद्ध होता है। यज्ञस्य यहाँ पर जो ङस् के स्थान में विहित स्य आदेश है, उसका स्थानिवद् भाव से सुप् होने का आरोप किया है। उस स्य प्रत्यय के होने पर भी सुप् सिद्ध है। उसको इस सूत्र से स्य प्रत्यय के यकार से उत्तर अकार को अनुदात्त होना सिद्ध है।

अब दूसरे उदाहरण के विषय में आलोचना करते है। दूसरा उदाहरण पित् प्रत्यय के विषय में है। इसका उदाहरण है युच्छति यहाँ पर युच्छ प्रमादे इस धातु से वर्तमाने लट् इससे लट करने पर, लट के अकार और टकार की इत्संज्ञा और लोप करने पर युच्छ् ल् इस स्थित्ति में लकार के स्थान में तिप्तस्झिसिप्थस्थमिब्वस्मस्तातांझथासाथान्ध्वमिड्वहिमहिङ् इस सूत्र से अठारह तिप्प्रत्ययों की प्राप्ति में प्रथम पुरुष एकवचन की विवक्षा में तिप् प्रत्यय करने पर युच्छ् तिप् इस स्थित्ति में पकार की हलन्त्यम् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर इत्संज्ञक पकार का तस्य लोपः इस सूत्र से लोप करने पर कर्तरि शप् इस सूत्र से धातु को शप्प्रत्यय करने पर शप्प्रत्यय के आदि शकार की लशक्वतद्धिते इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर और पकार की हलन्त्यम् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर उन दोनों इत्संज्ञक लकार पकार की तस्य लोपः इससे लोप करने पर युच्छ् अ ति इस स्थित्ति में सभी का संयोग होने पर युच्छति यह रूप सिद्ध होता है। तिप्प्रत्य के पित्त् होने से प्रकृत सूत्र से समुदाय के अन्त स्वर को उदात्त सिद्ध होता है। अर्थात् युच्छति यहाँ पर अन्तिम का अच् इकार को उदात्त होता है।

विशेष- यह सूत्र पूर्व के आद्युदात्तश्च इस सूत्र का अपवाद है। और उससे यह सूत्र जहाँ कार्य करता है, वहाँ आद्युदात्तश्च इस सामान्य सूत्र की प्रवृति नहीं होती है।

टिप्पणियाँ

12.3 चितः (६.१.१६३)

सूत्र का अर्थ– चित है जिस समुदित शब्द में उस शब्द को अन्त उदात्त होता है।

सूत्र का अवतरण– चित्प्रत्ययों के अन्त स्वर का उदात्त विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्र की व्याख्या– संज्ञा– परिभाषा– विधि– नियम अतिदेश अधिकार छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इससे चित्प्रत्ययान्त का प्रकृति प्रत्यय समुदा के अन्त्य स्वर को उदात्त करने का नियम किया है। चितः यहाँ पर षष्ठी अर्थ में प्रथमा एकवचन है। कर्षात्वतो घञः अन्त उदात्तः इस सूत्र से अन्तः इसकी और उदात्तः इसकी प्रथमा एकवचनान्त दो पदों की यहाँ अनुवृति आती है। अब यहाँ 'चितः सप्रकृतेर्बह्वकजर्थम्' इस वार्तिक से चित्प्रत्यय के समान समुदाय का यह अर्थ प्राप्त होता है। वैसे चकार इत् है जिसका वह चित् यहाँ बहुव्रीहि समास है। वह चित् इसका है यहाँ पर चित्–प्रातिपदिक से मत्वर्थ में अच्प्रत्यय करने पर चितः यह रूप बनता है। अतः पदों का अन्वय इस प्रकार सम्भव होता है – चितः अन्तः उदात्तः इति। उससे यहाँ यह सूत्र का अर्थ प्राप्त होता है – चित्प्रत्यय के समान प्रकृति प्रत्यय समुदाय का अन्त स्वर उदात्त होता है।

उदाहरण– नभन्तामन्यके संमे।

सूत्र अर्थ का समन्वय– नभन्तामन्यके संमे इसमें अन्यके यहाँ पर अकच् प्रत्यय विहित है। और वह अकच्प्रत्यय चित् है। अतः अकच रूप चित्प्रत्यय होने से अन्य के यहाँ पर प्रकृति प्रत्यय के समान समुदाय के अन्त स्वर एकार को प्रकृत सूत्र से उदात्त होता है।

12.4 तद्धितस्य (६.१.१६४)

सूत्र का अर्थ– तद्धित चित प्रत्यय को अन्त उदात्त होता है।

सूत्र का अवतरणम्– तद्धित चित्प्रत्ययान्त के प्रकृति प्रत्यय समुदाय का अन्तिम स्वर के उदात्त विधान के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्र की व्याख्या– संज्ञा– परिभाषा– विधि– नियम अतिदेश अधिकार छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इससे तद्धित चित्प्रत्ययान्त का प्रकृति प्रत्यय समुदाय के अन्तिम स्वर को उदात्त होने का विधान है। इस सूत्र में एक ही तद्धितस्य यह पद है। और वह तद्धितस्य पद षष्ठी एकवचनान्त है। कर्षात्वतो घञः अन्त उदात्तः इस सूत्र से अन्तः इसकी और उदात्तः इस प्रथमा एकवचनान्त दो पदों की यहाँ अनुवृति आ रही है। चितः इस पूर्व सूत्र से चितः इस षष्ठ्यर्थ में प्रथमा एकवचनान्त पद की यहाँ अनुवृति आती है। यहाँ चितः इस पद की अनुवृति से चित्प्रत्यय के समान प्रकृति प्रत्यय समुदाय का यह अर्थ प्राप्त होता है। उससे यहाँ पदों का अन्वय होता है – चितः तद्धितस्य प्रकृतिप्रत्ययसमुदायस्य अन्तः उदात्तः इति। उनके द्वारा यहाँ यह सूत्र का अर्थ होता है – तद्धित चित्प्रत्ययान्त के प्रकृति प्रत्यय समुदाय के अन्तिम स्वर को उदात्त हो।

उदाहरण- कौञ्जायनाः।

सूत्र अर्थ का समन्वय- कौञ्जायनाः यहाँ पर च्फञ् यह तद्धित प्रत्यय किया है। वैसे ही कुञ्ज शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा करने पर उसके बाद च्फञ् इस तद्धित प्रत्यय करने पर कुञ्ज च्फञ् इस स्थित्ति में च्फञ्-प्रत्यय के आदि चकार की चुटू इस सूत्र से इत्संज्ञा करने पर, ञकार की हलन्त्यम् इस सूत्र से इत्संज्ञा करने पर तस्य लोपः इस सूत्र से उन दोनों की इत् संज्ञा करने पर चकार ञकार के लोप होने पर कुञ्ज फ इस स्थित्ति में फकार के स्थान में 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' इस सूत्र से आयन् यह आदेश होने पर कुञ्ज आयन् अ इस स्थित्ति में च्फञ्-प्रत्यय के ञित् होने से 'तद्धितेष्वचामादेः' इस सूत्र से कुञ्ज शब्द के आदि उकार को वृद्धि औकार होने पर और भसंज्ञक कौञ्जायन शब्द के अन्त्य अकार की 'यस्येति च' इस सूत्र से लोप होने पर सभी का संयोग करने पर कौञ्जायन इस शब्द स्वरूप के तद्धितान्त होने से 'कृत्तद्धितसमासाश्च' इस सूत्र से उसकी प्रातिपदिक संज्ञा करने पर, वहाँ 'ङ्याप्प्रातिपदिकात्', प्रत्ययः परश्च इनके अधिकार में वर्तमान 'स्वौजसमौट्-छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्य स्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसांङ्योस्सुप्' इन सभी इक्कीस स्वादि प्रत्ययों की प्राप्ति में प्रथमा बहुवचन की विवक्षा में जस्प्रत्यय करने पर जस्प्रत्यय के आदि जकार की चुटू इस सूत्र से इत्संज्ञा करने पर तस्य लोपः इस सूत्र से उस इत्संज्ञक जकार के लोप होने पर कौञ्जायन अस् इस स्थित्ति में संयोग करने पर कौञ्जायनास् इस शब्द स्वरूप के सुबन्त होने से उस सकार के स्थान में ससजुषोः रुः इससे रु आदेश करने पर रु के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इससे इत्संज्ञा और लोप करने पर कौञ्जायना इस स्थित्ति में रेफ उच्चारण से परे वर्ण अभाव होने से विरामोऽवसानम् इस सूत्र से अवसान संज्ञा होने पर पूर्व रेफ के स्थान में खरवसानयोर्विसर्जनीयः इस सूत्र से रेफ के स्थान में विसर्ग करने पर कौञ्जायनाः यह सुबन्त रूप बनता है। यहाँ च्फञ् यह चित् और तद्धित प्रत्यय है। अतः तद्धितान्त कौञ्जायन इस शब्द के अन्त्य स्वर अकार को उदात्त करने का विधान है।

12.5 कितः (६.१.१६६)

सूत्र का अर्थः- कित तद्धितांत प्रत्ययों को अन्तोदात होता है।

सूत्र का अवतरणर- तद्धित कित्प्रत्ययान्त शब्द के अन्त स्वर को उदात्त विधान के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्र की व्याख्या- संज्ञा-परिभाषा-विधि-नियम अतिदेश अधिकार छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से तद्धित कित्प्रत्ययान्त शब्द के अन्त्य स्वर को उदात्त करने का विधान है। कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः इस सूत्र से अन्तः और उदात्तः इन प्रथमा एकवचनान्त दो पदों की यहाँ अनुवृति आ रही है। पूर्वसूत्र से तद्धितस्य इस षष्ठी एकवचनान्त पद की यहाँ अनुवृति आती है। यहाँ पदों का अन्वय है कितः तद्धितस्य अन्तः उदात्तः इति। तद्धितस्य इस पद का विशेष्य रूप से प्रत्ययस्य इस पद की यहाँ अनुवृत्ति आती है। उससे यहाँ यह सूत्रार्थ प्राप्त होता है - तद्धित कित्प्रत्ययान्त शब्द का अन्त उदात्त होता है।

उदाहरण- यदाग्नेयः।

टिप्पणियाँ

सूत्र अर्थ का समन्वय- इस उदाहरण में आग्नेयः इस पद में ढक् यह तद्धित प्रत्यय है। वैसे ही अग्नि शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा और उसके बाद ढक्- इस तद्धित प्रत्यय के करने पर अग्नि ढक् इस स्थित्ति में ढक्- प्रत्ययान्त के ककार की हलन्त्यम् इस सूत्र से इत्संज्ञा और तस्य लोपः इस सूत्र से इत्संज्ञक ककार के लोप करने पर अग्नि ढ इस स्थित्ति में ढकार के स्थान में आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् इस सूत्र से एय् यह आदेश होने पर अग्नि एय् अ इस स्थित्ति में ढक्प्रत्यय के कित्त् होने से किति च इस सूत्र से अग्नि शब्द के आदि अकार को वृद्धि करने पर आकार, भसंज्ञक अग्नि इस शब्द के अन्त्य इकार की यस्येति च इस सूत्र से लोप करने पर वर्ण संयोग करने पर आग्नेय इस शब्द स्वरूप के तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इस सूत्र से उसकी प्रातिपदिक संज्ञा करने पर उसके बाद ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः परश्च इनके अधिकार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसांङ्योस्सुप् इस सूत्रे से खाले कपोत न्याय से इक्कीस स्वादि प्रत्ययों की प्राप्ति में प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय करने पर अनुनासिक होने से पाणिनि की प्रतिज्ञा से उस उकार की उपदेशेऽजनुनासिकः इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर तस्य लोपः इस सूत्र से इत्संज्ञक उकार का लोप होने पर आग्नेय स् इस स्थित्ति में संयोग करने पर निष्पन्न आग्नेयस् इस शब्द स्वरूप के सुबन्त होने से उस सकार के स्थान में ससजुषोः रुः इससे रु आदेश होता है, और उस रु के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इससे इत्संज्ञा होने पर और लोप करने पर आग्नेयर् इस स्थित्ति में रेफ के उच्चारण से परे वर्ण के अभाव होने से विरामोऽवसानम् इस सूत्र से अवसान संज्ञा होने पर उससे पूर्व रेफ के स्थान में खरवसानयोर्विसर्जनीयः इस सूत्र से रेफ के स्थान में विसर्ग करने पर आग्नेयः इस सुबन्त रूप की प्राप्ति होती है।

12.6 तिसृभ्यो जसः (६.१.१६६)

सूत्र का अर्थ- तिसृ शब्द से परे जस् को अन्तोदात्त होता है।

सूत्र का अवतरण- तिसृ शब्द से परे जस् के अन्त्य स्वर को उदात्त विधान के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्र की व्याख्या- छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह विधि सूत्र है। इससे उदात्त स्वर का विधान है। यहाँ दो पद हैं। तिसृभ्यः यह पञ्चमी बहुवचनान्त पद है, जसः यह षष्ठी एकवचनान्त पद है। कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः इस सूत्र से अन्तः, उदात्तः प्रथमा एकवचनान्त दो पदों की यहाँ अनुवृति आ रही है। तिसृभ्य यहाँ पर पञ्चमी विधान से तस्मादित्युत्तस्य इस परिभाषा से यहाँ परस्य यह पद उपस्थित होता है। यहाँ पदों का अन्वय है - तिसृभ्यः परस्य जसः अन्तः उदात्तः स्यात् इति। तिसृ शब्द नित्य बहुवचनान्त है। इस प्रकार यहाँ सूत्र का अर्थ है - तिसृ शब्द से परे जस का अन्त स्वर उदात्त हो।

उदाहरण- तिस्रो द्यावः सवितुः।

सूत्र अर्थ का समन्वय- तिसृ शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होने पर, उसके बाद 'ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः परश्च' इनके अधिकार में वर्तमान

स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसांङ्योस्सुप् इस सूत्र से खल कपोत न्याय से इक्कीस स्वादि प्रत्ययों की प्राप्ति में प्रथमा बहुवचन की विवक्षा में जस् प्रत्यय करने पर जस् प्रत्यय के आदि जकार की चुटू इस सूत्र से इत् संज्ञा करने पर तस्य लोपः इस सूत्र से उस इत् संज्ञक जकार के लोप होने पर तिसृ अस् इस स्थित्ति में अचि र ऋतः इस सूत्र से अच् परक होने से तिसृ शब्द के ऋकार के स्थान में रेफ आदेश होने पर तिसृस् इस स्थित्ति में उस शब्द के सुबन्त होने से उस सकार के स्थान में ससजुषोः रुः इससे सकार के स्थान में रु आदेश होने पर और रु के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इससे इत् संज्ञा करने पर और लोप करने पर तिस्रर् इस स्थित्ति में रेफ उच्चारण से परे वर्ण अभाव होने पर विरामोऽवसानम् इस सूत्र से अवसान संज्ञा करने पर उसके परे होने पर पूर्व रेफ के स्थान में खरवसानयोर्विसर्जनीयः इस सूत्र से रेफ के स्थान में विसर्ग करने पर तिस्रः यह सुबन्त रूप सिद्ध होता है। इसलिए ही तिसृभ्यः यहाँ पर प्रकृत सूत्र से अन्तिम अकार को उदात्त करने का नियम किया है।

पाठगत प्रश्न 12.1

1. अग्नि शब्द से नि प्रत्यय का विधान किससे होता है?
2. आद्युदात्तश्च इस सूत्र से किसका नियम किया गया है?
3. अग्नि शब्द में नकार से परे इकार उदात्त होगा अथवा अनुदात्त?
4. अग्निः यहाँ पर क्या धातु है?
5. सुप् प्रत्यय के और पित् प्रत्यय को अनुदात्त विधान किस सूत्र से होता है?
6. चितः अन्त उदात्त किस सूत्र से होता है?
7. तद्धित यह किस प्रकार का सूत्र है?
8. कित तद्धित का अन्त उदात्त किस सूत्र से होता?
9. तिसृ शब्द के जस का अन्त उदात्त किससे होता है?

12.7 सावेकाचस्तृतीयादिर्विभक्तिः (६.१.१८६)

सूत्र का अर्थ- सु के परे रहते जो एक अच् वाला शब्द, उससे परे जो तृतीय विभक्ति से लेकर आगे की विभक्तियाँ, उनको उदात्त हो।

सूत्र का अवतरण- सु के परे होने पर उससे पूर्व एक अच वाले शब्द से परे तृतीया आदि विभक्ति में उदात्त विधान के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्र की व्याख्या- छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह विधि सूत्र है। इससे उदात्त स्वर का नियम करते हैं। यहाँ चार पद हैं। सौ एकाचः तृतीयादिः विभक्तिः ये सूत्र में आये पदच्छेद है। यद्यपि

टिप्पणियाँ

सु यह सप्तमी बहुवचन में सुषु इसका ही रूप है, फिर भी व्याख्यान से सौ यह पद यहाँ सप्तमी बहुवचनान्त का बोध कराती है। एकाच: यह पञ्चमी एकवचनान्त पद है, तृतीयादि:, और विभक्ति: ये दोनों पद यहाँ प्रथमा एकवचनान्त है। कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्त: इस सूत्र से उदात्त: इस प्रथमा एकवचनान्त पद की यहाँ अनुवृति आ रही है। सौ यहाँ पर सप्तमी विधान होने से तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य इस परिभाषा से यहाँ सौ इस व्यवधान रहित पूर्व का यह अर्थ प्राप्त होता है। एकाच: इस पद के विशेष्य रूप से शब्दस्य इस षष्ठी एकवचनान्त पद को यहाँ जोड़ा जाता है। प्रकृत सूत्र से विहित उदात्त धर्म से तृतीया आदि विभक्ति में अच् को होता है। उससे यहाँ पदों का अन्वय होता है - सौ परे सति पूर्वस्मात् एकाच: शब्दात् परस्य तृतीयादिविभक्ते: स्वर: उदात्त: स्यात् इति।

उदाहरण- वाचा विरूप:।

सूत्र अर्थ का समन्वय- वाचा विरूप: इस उदारहरण में विरूप: यह सु प्रत्ययान्त पद है। अत: उस प्रकार के सु परक होने से पूर्व एक अच् वाले वाच्- शब्द से परे टा रूप तृतीया विभक्ति में स्वर आकार का प्रकृत सूत्र से उदात्त करने का विधान है।

12.8 अन्तोदात्तादुत्तरपदादन्यतरस्यामनित्यसमासे (६.१.१६९)

सूत्र का अर्थ- नित्य अधिकार के हुए समास से अन्यत्र जो अनित्य समास, उसमे जो अन्तोदात्त एकाच् उत्तर पद उससे उत्तर तृतीया आदि विभक्ति को विकल्प से उदात्त हो।

सूत्र का अवतरण- अनित्य समास में अन्तोदात्त से उत्तर पद के परे तृतीया आदि विभक्ति में उदात्त विधान के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्र की व्याख्या- संज्ञा- परिभाषा- विधि- नियम अतिदेश अधिकार छ: प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इससे उदात्त स्वर का विधान है। इस सूत्र में चार पद हैं। अन्तोदात्तात् उत्तरपदात् अन्यतरस्याम् अनित्यसमासे ये सूत्र में आये पदच्छेद है। अन्तोदात्तात्, और उत्तरपदात् ये दो पद पञ्चमी एकवचनान्त है, अन्यतरस्याम् यह सप्तमी बहुवचनान्त पद है, अनित्यसमासे यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। सावेकाचस्तृतीयादिर्विभक्ति: इस सूत्र से यहाँ एकाच: इस पञ्चमी एकवचनान्त पद की, तृतीयादि: और विभक्ति: प्रथमा एकवचनान्त दो पदों की यहाँ अनुवृति आ रही है। कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्त: इस सूत्र से उदात्त: इस प्रथमा एकवचनान्त पद की यहाँ अनुवृति आ रही है। एकाच: यह अनुवृति पद यहाँ उत्तरपदात् इसका विशेषण है, अन्तोदात्तात् यह भी उत्तरपदात् इसका विशेषण है। इस प्रकार यहाँ पदों का अन्वय होता है - अनित्यसमासे अन्तोदात्तात् एकाच: उत्तरपदात् तृतीयादि: विभक्ति: उदात्त: अन्यतरस्याम् इति। यहाँ विधीयमान उदात्त धर्म का तृतीया आदि विभक्ति के परे स्वर को होता है। एकाच: इस पद की अनुवृति होने से वर्तमान पद के विशेष्य रूप से शब्दस्य इस षष्ठी एवचनान्त पद का यहाँ ग्रहण है। उससे यह सूत्र का अर्थ यहाँ प्राप्त होता है - अनित्य समास में अन्तोदात्त उत्तरपद से एकाच शब्द से परे तृतीया आदि विभक्ति में उदात्त हो। यहाँ अन्यतरस्याम् इस कथन से प्रकृत सूत्र से विहित कार्य विकल्प से होता है।

उदाहरण- परमवाचा।

सूत्र अर्थ का समन्वय– परमा च असौ वाक् चेति इति विग्रह करने पर कर्मधारय समास में निष्पन्न परमावाच् इस शब्द का समास होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होने पर, वहाँ स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसांङ्योस्सुप् इस सूत्र से खल कपोत न्याय से इक्कीस स्वादि प्रत्ययों की प्राप्ति में तृतीया एकवचन की विवक्षा में टा प्रत्यय करने पर टा प्रत्यय के आदि टकार की चुटू इस सूत्र से इत् संज्ञा करने पर तस्य लोपः इस सूत्र से उस इत् संज्ञक टकार के लोप होने पर सभी का संयोग करने पर परमवाचा यह रूप सिद्ध होता है। यहाँ परमा इस पूर्व पद को, और वाक् इस उत्तर पद को। पूर्वपद परमा यह अन्तोदात्त है। अतः उससे परे का वाच्– शब्द के एकाच्–होने से उसके परे तृतीया विभक्ति में आकार का प्रकृत सूत्र से उदात्त होता है।

12.9 ऊडिदम्पदाद्यपुप्पुभ्रैद्युभ्यः (६.१.१७६)

सूत्र का अर्थ– इन शब्दों से उत्तर असर्वनाम स्थान विभक्ति उदात्त होती है।

सूत्र का अवतरण– ऊठ्, इदम्, पदादी, अप्, पुम्, रै, तथा दिव शब्दों से उत्तर असर्वनाम स्थान विभक्ति उदात्त विधान के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्र की व्याख्या– संज्ञा– परिभाषा– विधि– नियम अतिदेश अधिकार छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इससे उदात्त स्वर का विधान है। इस सूत्र में एक ही समस्त पद है। वहाँ समस्त पद में समास इस प्रकार है – पद् आदिः येषां ते पदादयः यहाँ बहुव्रीहि समास है, ऊट् च इदं च पदादयश्च अप् च पुम् च रै च दिव् च इस विग्रह में इतरेतर द्वन्द्व समास है, ऊडिदम्पदाद्यपुप्पुभ्रैदिवः यह रूप बनता है, इसका ही पञ्चमीं विभक्ति में 'ऊडिदम्पदाद्यपुप्पुभ्रैद्युभ्यः' है। अञ्चेश्छन्दस्यसर्वनामस्थानम् इस सूत्र से यहाँ असर्वनामस्थानम् इस प्रथमा एकवचनान्त पद की यहाँ अनुवृति आ रही है। सावेकाचस्तृतीयादिर्विभक्तिः इस सूत्र से यहाँ विभक्तिः इस प्रथमा एकवचनान्त पद की यहाँ अनुवृति आ रही है। कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः इस सूत्र से उदात्तः इस प्रथमा एकवचनान्त पद की यहाँ अनुवृति आ रही है। और असर्वनाम स्थानम् यह संज्ञा बोधक पद है, सुडनपुंसकस्य इस सूत्र से सु, औ, जस्, अम्, औट् इनकी सर्वनामस्थान संज्ञा होती है, उनसे भिन्न प्रत्यय असर्वनामस्थान कहलाते हैं। उन अनुवृति पदों से यहाँ लिङ्ग के व्यत्ययसे असर्वनामस्थान यह रूप प्राप्त होता है। यहाँ पदों का अन्वय इस प्रकार है – ऊडिदम्पदाद्यपुप्पुभ्रैद्युभ्यः असर्वनामस्थाना विभक्तिः उदात्ता इति। इस प्रकार यहाँ यह सूत्र का अर्थ होता है – ऊडिदम्पदाद्यपुप्पुभ्रैद्युभ्य से परे असर्वनामस्थान विभक्ति को उदात्त होता है।

उदाहरण– अक्षद्युवे, पद्भ्यां भूमिः इत्यादीनि अत्र उदारहणानि।

सूत्र अर्थ का समन्वय– पद्भ्यां भूमिः इस उदाहरण में पद्–शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रादिपदिकम् इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होने पर उससे स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसि – भ्याम्भ्यस्ङसोसांङ्योस्सुप् इस सूत्र से इक्कीस स्वादि प्रत्ययों की प्राप्ति में तृतीया द्विवचन की विवक्षा में भ्याम्– प्रत्यय करने पर पद् भ्याम् इस स्थित्ति में उन सभी का संयोग करने पर पद्भ्याम्

टिप्पणियाँ

यह रूप सिद्ध होता है। यहाँ पद यह शब्द पदादिगण में पढ़े हुए होने से और उसके परे भ्याम् इसकी सर्वनामस्थान संज्ञा के अभाव से प्रकृत सूत्र से उस पद्भ्याम् इस पद के अन्त स्वर आकार को उदात्त होता है।

इसी प्रकार अक्षद्युवे इत्यादि में भी समान रूप से प्रक्रिया कार्य समझना चाहिए।

12.10 अष्टनो दीर्घात् (६.१.१७२)

सूत्र का अर्थ– शस आदि विभक्ति उदात्त होती है।

सूत्र का अवतरण– दीर्घ अन्त वाला जो अष्टन्–शब्द उससे उत्तर शस आदि असर्वनामस्थान संज्ञक के उदात्त विधान के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्र की व्याख्या– छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इससे उदात्त स्वर का विधान है। यहाँ दो पद है – अष्टनः और दीर्घात्। वहाँ अष्टनः, और दीर्घात् दोनों पद पञ्चमी एकवचनान्त है। कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः इस सूत्र से उदात्तः इस प्रथमा एकवचनान्त पद की यहाँ अनुवृति आती है। पूर्व सूत्र से सावेकाचस्तृतीयादिर्विभक्तिः इससे यहाँ विभक्तिः इस प्रथमा एकवचनान्त पद की यहाँ अनुवृति आती है। अञ्चेश्छन्दस्यसर्वनामस्थानम् इस सूत्र से असर्वनामस्थानम् इस प्रथमा एकवचनान्त संज्ञा बोधक पद की यहाँ अनुवृत्ति आ रही है। और लिङ्ग का व्यत्यय होने पर असर्वनामस्थाना यह रूप प्राप्त होता है। यहाँ पदों का अन्वय इस प्रकार होता है – दीर्घात् अष्टनः असर्वनामस्थानविशिष्टा विभक्तिः उदात्तः इति। यहाँ दीर्घात् यह पद अष्टनः इसका विशेषण है, तदन्त विधि से यहाँ दीर्घान्त अष्टन् से यह अर्थ प्राप्त होता है। उससे यह अर्थ यहाँ प्राप्त है – दीर्घान्त अष्टन्–शब्द से परे शस आदि असर्वनामस्थान विभक्ति उदात्त हो।

उदाहरण– अष्टाभिर्दशभिः।

सूत्र अर्थ का समन्वय– अष्टन्–शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होने पर ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः परश्च इनके अधिकार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसांङ्योस्सुप् इस सूत्र से इक्कीस स्वादि प्रत्ययों की प्राप्ति में तृतीया बहुवचन की विवक्षा में भिस होने पर अष्टन् भिस् इस स्थिति में न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य इस सूत्र से अष्टन्–शब्द के नकार का लोप होने पर अष्ट भिस् इस स्थित्ति में सभी का संयोग करने पर निष्पन्न अष्टभिस् इस शब्द स्वरूप के सुबन्त होने से तदन्त सकार के स्थान में ससजुषोः रुः इससे रु आदेश होने पर रु के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इससे इत् संज्ञा करने पर और लोप करने पर आत्त्व होने पर अष्टाभिर् इस स्थित्ति में रेफ उच्चारण से परे वर्ण के अभाव होने पर विरामोऽवसानम् इस सूत्र से अवसान संज्ञा होने पर उसके परे होने पर पूर्व रेफ के स्थान में खरवसानयोर्विसर्जनीयः इस सूत्र से रेफ के स्थान में विसर्ग होने पर अष्टाभिः यह सुबन्त रूप सिद्ध होता है। प्रकृत सूत्र से अष्टाभिः यहाँ पर भकार से उत्तर अच् इकार को उदात होता है।

12.11 शतुरनुमो नद्यजादी (६.१.१७३)

सूत्र का अर्थ- नुम् रहित जो अन्तोदात शतृ प्रत्ययान्त शब्द तदन्त से परे नदी संज्ञक प्रत्यय, तथा अजादि शस आदि विभक्ति को उदात्त होता है।

सूत्र का अवतरण- जिस शतृ प्रत्यय को नुम आगम नहीं होता है, तदन्त अन्तोदात्त से परे जो नदी प्रत्यय और अजादि शस आदि विभक्ति उसको उदात्त विधान के लिए इस सूत्र की रचना की।

सूत्र की व्याख्या- छः प्रकार के सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। शतुः अनुमः नद्यजादी ये सूत्र में आये पदच्छेद हैं। शतुः और अनुमः ये पञ्चम्यन्त पद है। नद्यजादी यह प्रथमा द्विवचनान्त पद है। नदी च अजादिश्च यहाँ कर्मधारय समास है। कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः इस सूत्र से उदात्तः प्रथमा एकवचनान्त पद की यहाँ अनुवृति आती है। पूर्व सूत्र से सावेकाचस्तृतीयादि र्विभक्तिः इससे यहाँ विभक्तिः इस प्रथमा एकवचनान्त पद की यहाँ अनुवृति है। अञ्चेश्छन्दस्यसर्व नामस्थानम् इस सूत्र से असर्वनामस्थानम् इस प्रथमा एकवचनान्त संज्ञा बोधक पद की यहाँ अनुवृति है। उसका लिङ्ग व्यत्यय होने से असर्वनामस्थान यह रूप प्राप्त होता है। यहाँ पदों का अन्वय इस प्रकार है - अनुमः शतुः अन्तोदात्तात् परा नदी अजादिः असर्वनामस्थाना विभक्तिः उदात्ता इति। और सूत्र का अर्थ है - नुम् आगम रहित शतृ प्रत्ययान्त अन्तोदात्त से परे सर्वनाम स्थान संज्ञक से भिन्न विभक्ति अवयव स्वरों का और नदी संज्ञक ङीप्-ङीष्-ङीन्-प्रत्ययों के ईकार को उदात्त होता है।

उदाहरण- अच्छा रर्वं प्रथमा जाघ्नती।

सूत्र अर्थ का समन्वय- जानती यहाँ पर जानत् यह शतृ प्रत्ययान्त का रूप है। और ऋन्नेभ्यो ङीप् इस सूत्र से ङीप्रत्यय करने पर जानत् ङीप् इस स्थित्ति में ङीप्रत्यय के आदि ङकार की लशक्वतद्धिते इस सूत्र से इत् संज्ञा करने पर और तस्य लोपः इस सूत्र से उसके लोप होने पर जानत् ई इस स्थित्ति में सभी का संयोग करने पर निष्पन्न जानती इस शब्द स्वरूप का ङीप्रत्ययान्त होने से और सु विभक्ति कार्य करने पर जानती यह रूप बनता है। यहाँ जानत् यह शतृप्रत्ययान्त का रूप है, और वहाँ शतृ प्रत्यय को नुम् आगम नहीं होता है। अतः प्रकृत सूत्र से नुम् रहित शतृ के अन्तोदात्त से परे नदी संज्ञक ङीप्रत्यय के ईकार को उदात्त होता है।

12.12 उदात्तयणो हल्पूर्वात् (६.१.१७४)

सूत्र का अर्थ- हल् पूर्व में है जिससे, ऐसा जो उदात्त के स्थान में यण् उससे परे नदी संज्ञक प्रत्यय और शस आदि विभक्ति को उदात्त होता है।

सूत्र का अवतरण- उदात्त स्वर के स्थान में विहित जो यण आदेश उससे पूर्व नदी संज्ञक और शस आदि विभक्ति को उदात्त विधान के लिए इस सूत्र की रचना की।

टिप्पणियाँ

सूत्र की व्याख्या- संज्ञा-परिभाषा-विधि-नियम-अतिदेश-अधिकार छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इससे उदात्त स्वर का विधान करते हैं। इसमें दो पद हैं। उदात्तयणः यह पञ्चम्यन्त पद है, हल्पूर्वात् यह भी पञ्चम्यन्त पद है। उदात्त स्थान में यण् उदात्तयण् यहाँ मध्य पद के लोप होने पर कर्मधारय समास है, उस उदात्तयण का। हल् पूर्व में है जिसके वह हल्पूर्व यहाँ बहुव्रीहि समास है, उस हल्पूर्व से। शतुरनुमो नद्यजादी इस सूत्र से नद्यजादी इस प्रथमान्त पद की यहाँ अनुवृति आ रही है। कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः इस सूत्र से उदात्तः इस प्रथमा एकवचनान्त पद की यहाँ अनुवृति आ रही है, और उसका लिङ्ग व्यत्यय होने से उदात्त होता है। पूर्व सावेकाचस्तृतीयादिर्विभक्तिः इस सूत्र से यहाँ विभक्तिः इस प्रथमा एकवचनान्त पद की अनुवृति है। अञ्चेश्छन्दस्य सर्वनामस्थानम् इस सूत्र से असर्वनामस्थानम् इस प्रथमा एकवचनान्त संज्ञा बोधक पद की अनुवृति है। असर्वनामस्थान विभक्तिः इस पद का विशेषण है, अत लिङ्ग के व्यत्यय होने से असर्वनामस्थाना यह रूप प्राप्त होता है। असर्वनामस्थानम् यह संज्ञा बोधक पद है, सुडनपुंसकस्य इस सूत्र से च सु, औ, जस्, अम्, औट् इनकी सर्वनामस्थान संज्ञा होती है, उनसे भिन्न प्रत्यय असर्वनामस्थान कहलाते हैं, शस आदि विभक्ति असर्वनामस्थान कहलाते है। यहाँ पदों का अन्वय इस प्रकार है - हल्पूर्वात् उदात्तयणः नदी अजादिः असर्वनामस्थाना विभक्तिः उदात्ताः इति। और उससे यहाँ सूत्र का यह अर्थ प्राप्त होता है, हल् परक उदात्त स्थान में विहित जो यण् उससे परे सर्वनामस्थान संज्ञक विभक्ति के अवयव स्वरों की और नदी संज्ञक ङीप्-ङीष्-ङीन्-प्रत्ययों के ईकार को उदात्त होता है।

उदाहरण- चोदयित्री सूनृतानाम्।

सूत्र अर्थ का समन्वय- चोदयित्री यहाँ पर चोदि- धातु से तृच्प्रत्यय करने पर चोदि तृ इस स्थित्ति में और तृच्प्रत्यय को इट् आगम होने पर चोदि इतृ इस स्थित्ति में चोदि-धातु के इकार को गुण एकार करने पर चोदे इतृ इस स्थित्ति में यथासंख्यमनुदेशः समानाम् इस परिभाषा से एचोऽयवायावः इस सूत्र से एकार के स्थान में अय्-इत्यादेश होने पर चोदयितृ इस स्थित्ति में उस तृच्प्रत्ययान्त चोदयितृ शब्द स्वरूप के कृदन्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा करने पर ऋन्नेभ्यो ङीप् इस सूत्र से ङीप्प्रत्यय करने पर चोदयितृ ङीप् इस स्थित्ति में ङीप्प्रत्यय के आदि ङकार की लशक्वतद्धिते इस सूत्र से इत्संज्ञा करने पर तस्य लोपः इस सूत्र से उसका लोप होने पर चोदयितृ ई इस स्थित्ति में ऋकार के स्थान में रेफ आदेश होने पर निष्पन्न चोदयित्री इस शब्द स्वरूप के ङीप्प्रत्ययान्त होने से वहाँ ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसांङ्योस्सुप् इस सूत्र से इक्कीस स्वादि प्रत्ययों की प्राप्ति में प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय करने पर अनुनासिक होने से पाणिनि की प्रतिज्ञा से उकार की उपदेशेऽजनुनासिकः इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा करने पर तस्य लोपः इस सूत्र से इत्संज्ञक उकार के लोप होने पर चोदयित्री स् इस स्थित्ति में संयोग करने पर चोदयित्री स् इस स्थित्ति में हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् इस सूत्र से ङ्यन्त से परे सु प्रत्यय के सकार का लोप होने पर चोदयित्री यह रूप सिद्ध होता है। यहाँ चोदयित्री इसमें चोदयितृ इस अवस्था में उदात्त ऋकार के स्थान में यण् रेफ का विधान है, और उस रेफ से हल्पूर्व है। अतः उससे परे नदीसंज्ञक ङीप्प्रत्यय ईकार को प्रकृत सूत्र से उदात्त होता है।

12.13 ह्रस्वनुड्भ्यां मतुप् (६.१.१७६)

सूत्र का अर्थ- अन्तोदात ह्रस्वान्त तथा नुट् से उत्तर मतुप को उदात होता है।

सूत्र का अवतरण- ह्रस्वान्त अन्तोदात्त से परे और नुट् से परे मतुप को उदात्त विधान के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्र की व्याख्या- छः प्रकार पाणिनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इससे उदात्त स्वर का विधान है। दो पद वाले इस सूत्र में ह्रस्वनुड्भ्याम् यह पञ्चमीं द्विवचनान्त पद है, और मतुप् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः इस सूत्र से उदात्तः प्रथमा एकवचनान्त पद की यहाँ अनुवृति है। अन्तोदात्तादुत्तरपदादन्यतरस्यामनित्यसमासे इस सूत्र से यहाँ अन्तोदात्तात् इस पञ्चमी एकवचनान्त पद की यहाँ अनुवृति है। यहाँ पदों का अन्वय है - ह्रस्वनुड्भ्याम् अन्तोदात्तात् मतुप् उदात्तः इति। यहाँ अन्तोदात्तात् यह पदञ्चम्यन्त पद नुट् इसका विशेषण है। उस के द्वारा तदन्तविधि से और अन्तोदात्त नुट्-प्रत्ययान्त से यह अर्थ होता है। यह सूत्र का अर्थ है - ह्रस्वान्त अन्तोदात्त से और नुट् प्रत्ययान्त से परे मतुप् को उदात्त होता है।

उदाहरण- अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सखायः।

सूत्र अर्थ का समन्वय- अक्षण्वन्तः यहाँ पर अन्तोदात्त नुट् से मतुप्-प्रत्यय किया गया है। अतः अन्तोदात्त नुडन्त से परे मतुप् के अकार को प्रकृत सूत्र से उदात्त का विधान किया है।

12.14 ङ्याश्छन्दसि बहुलम् (६.१.१७८)

सूत्र का अर्थ- ङ्यन्त से उत्तर बहुल करके नाम को उदात्त होता है।

सूत्र का अवतरण- छन्द में ङ्यन्त से परे नाम को विकल्प से उदात्त विधान के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्र की व्याख्या- छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इससे उदात्त स्वर का विधान है। ङ्याः छन्दसि बहुलम् ये सूत्र में आये पदच्छेद है। तीन पद वाले इस सूत्र में ङ्याः यह पञ्चमी एकवचनान्त पद है, छन्दसि यह सप्तमी एकवचनान्त पद है, बहुलम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। नामन्यतरस्याम् इस सूत्र से यहाँ नाम् इस प्रथमा एकवचनान्त पद की, कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः इस सूत्र से उदात्तः इस प्रथमा एकवचनान्त पद की, पूर्वसूत्र से सावेकाचस्तृतीयादिर्विभक्तिः इससे यहाँ विभक्तिः इस प्रथमा एकवचनान्त पद की अनुवृति है। यहाँ यह पदों का अन्वय होता है - ङ्याः छन्दसि बहुलं नाम् उदात्तः इति। यहाँ नाम् यह नुड आगम सहित आम्-विभक्ति का रूप है। उसका यहाँ षष्ठी एकवचनान्त का व्यत्यय है। यहाँ यह सूत्र का अर्थ होता है - छन्द में ङ्यन्त से परे नाम को उदात्त होता है।

उदाहरण- देवघ्सेनानामभिभञ्जतीनूम्।

सूत्र अर्थ का समन्वय- अभिभञ्जतीनाम् यहाँ पर अभिभञ्जती यह ङीप्प्रत्ययान्त पद है। अतः अभिभञ्जती यह ङ्यन्त पद है। उसको प्रकृत सूत्र से ङ्यन्त अभिभञ्जती इससे षष्ठी बहुवचन की विवक्षा में विहित नुड् आगम सहित आम् प्रत्यय का आकार को उदात्त होता है।

टिप्पणियाँ

12.15 न गोश्वन्सावर्णराडङ्क्रुङ्कृद्भ्यः (६.१.१८२)

सूत्र का अर्थ- इनको जो कुछ भी ऊपर स्वर विधान कहा है, वह नहीं होता है।

सूत्र का अवतरण- छन्दस में गो, श्वन्- इत्यादि के परे हल आदि विभक्ति के उदात्त निषेध के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्र की व्याख्या- छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह निषेध सूत्र है। इससे उदात्त स्वर का निषेध होता है। इस सूत्र में दो पद है - न, और गोश्वन्सावर्णराडङ्क्रुङ्कृद्भ्यः। वहाँ न यह अव्यय पद है, गोश्वन्सावर्णराडङ्क्रुङ्कृद्भ्यः यह समस्त पद पञ्चमी बहुवचनान्त है। गौश्च श्वा च सावर्णश्च राट् च अङ् च क्रुङ् च कृत् च इस विग्रह करने पर इतरेतरद्वन्द्वसमास में गोश्वन्सावर्णराडङ्क्रुङ्कृदः, उसका पञ्चमी विभक्ति में गोश्वन्सावर्णराडङ्क्रुङ्कृद्भ्यः बनता है। यहाँ सावर्णः इसका सु के परे अवर्णः यह अर्थ है। षट्त्रिचतुर्भ्यो हलादिः इस सूत्र से यहाँ हलादिः इस प्रथमा एकवचनान्त पद, कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः इस सूत्र से उदात्तः इस प्रथमा एकवचनान्त पद, सावेकाचस्तृतीयादिर्विभ - क्तिः इससे यहाँ विभक्तिः इस प्रथमा एकवचनान्त पद की अनुवृति है। यहाँ यह पदों का अन्वय है - गोश्वन्सावर्णराडङ्क्रुङ्कृद्भ्यः हलादिः विभक्तिः न उदात्तः इति। उससे यह सूत्र का अर्थ प्राप्त होता है - गो श्वन् सावर्ण = सु प्रथमा एकवचन के परे रहते जो अवर्णान्त शब्द राट, अङ् क्रुङ् कृद् से जो भी ऊपर हलादि विभक्ति को कहा गया उदात्त नहीं होता है।

उदाहरण- गोभ्यो गातुम्।

सूत्र अर्थ का समन्वय- गोभ्यः यहाँ पर गो शब्द से भ्यस् यह हलादि विभक्ति है। अत प्रकृत सूत्र से गो शब्द से परे भिस् इस हलादि विभक्ति को उदात्त का निषेध करता है।

12.16 दिवो झल् (६.१.१८३)

सूत्र का अर्थ- दिव् शब्द से परे झलादि विभक्ति को उदात्त नहीं होता है।

सूत्र का अवतरण- दिव्-शब्द से परे झलादि विभक्ति को उदात्त निषेध के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्र की व्याख्या- छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह निषेधसूत्र है। इससे उदात्त स्वर का निषेध करते हैं। इस सूत्र में दो ही पद हैं - दिवः और झल्। वहाँ दिवः यह पञ्चमी एकवचनान्त पद है, झल् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। न गोश्वन्सावर्णराडङ्क्रुङ्कृद्भ्यः इस सूत्र से यहाँ न इस अव्यय की, कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः इस सूत्र से उदात्तः इस प्रथमा एकवचनान्त पद की, सावेकाचस्तृतीयादिर्विभक्तिः इससे यहाँ विभक्तिः इस प्रथमा एकवचनान्त पद की अनुवृति है। यहाँ पदों का अन्वय- दिवः झल् विभक्तिः न उदात्तः इति। यहाँ झल् यह विभक्ति का विशेषण है। अतः यस्मिन् विधिस्तदादावल्ग्रहणे इस परिभाषा से उस आदि विधि से झलादि विभक्ति यह अर्थ प्राप्त होता है। सूत्र का अर्थ है - दिव्-शब्द से परे झल् आदि विभक्ति को उदात्त नहीं होता है।

उदाहरण- द्युभिरक्तुभिः।

सूत्र अर्थ का समन्वय- दिव्-शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होने पर प्रत्ययः परश्च ङ्याप्प्रातिपदिकात् इन तीन सूत्रों के अधिकार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसांङ्योस्सुप् इस सूत्र से इक्कीस स्वादि प्रत्ययों की प्राप्ति में तृतीया एकवचन की विवक्षा में भिस्प्रत्यय करने पर दिव् भिस् इस स्थित्ति में दिव्-शब्द के स्थान में अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा से दिव उत् इस सूत्र से उत् यह अन्तादेश अनुबन्ध लोप करने पर दि उ भिस् इस स्थित्ति में इकार के स्थान में इको यणचि इस सूत्र से यण आदेश होने पर यकार करने पर द् य् उ भिस् इस स्थित्ति में भिस के सकार को ससजुषो रूः इस सूत्र से रुत्व होने पर और विसर्ग करने पर द्युभिः यह रूप सिद्ध होता है। द्युभिःयहाँ पर दिव्-शब्द से भिस् यह प्रत्यय है। और वह भिस्प्रत्यय झलादि है। अत प्रकृत सूत्र से दिव्-शब्द के परे झलादि भिस प्रत्यय के उदात्त का निषेध करता है।

12.17 तित्स्वरितम् (६.१.१८५)

सूत्र का अर्थ- तकार इत् संज्ञक है जिसका, उसको स्वरित होता है।

सूत्र का अवतरण- तित् प्रत्यय के स्वर को स्वरित विधान के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्र की व्याख्या- छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इससे स्वरित स्वर का विधान करते है। इस सूत्र में दो पद है। तित् और स्वरितम्। यहाँ इन दोनों ही पद प्रथमा एकवचनान्त है। तित् इस पद के विशेष्य रूप से प्रत्ययः इस पद को यहाँ जोड़ना चाहिए। इस प्रकार यहाँ पदों का अन्वय है - तित् (प्रत्ययः) स्वरितम्। सूत्र का अर्थ है - तित्प्रत्यय स्वरित हो।

उदाहरण- क्वं नूनम्।

सूत्र अर्थ का समन्वय- किम्-शब्द से किमोऽत् इस सूत्र से अत्प्रत्यय करने पर हलन्त्यम् इस सूत्र से तकार की इत्संज्ञा करने पर तस्य लोपः इस सूत्र से उस इत्संज्ञक तकार के लोप करने पर किम् अ इस स्थित्ति में क्वाति इस सूत्र से किम् इस शब्द के स्थान में क्व आदेश होने पर क्व अत् इस स्थित्ति में अतो गुणो इस सूत्र से क्व इसके अकार का और अत् इसके अकार के स्थान में पररूप एकादेश होने पर अकार में सभी का संयोग करने पर क्व यह रूप सिद्ध होता है। क्व यह तित्प्रत्ययान्त है। अत क्व यहाँ पर प्रकृत सूत्र से अकार को स्वरित स्वर होता है।

12.18 उपोत्तमंरिति (६.१.१९७)

सूत्र का अर्थ- रेफ इत् वाले शब्द के उपोत्तम को उदात्त होता है।

सूत्र का अवतरण- रित्प्रत्ययान्त के उपोत्तम को उदात्त विधान के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्र की व्याख्या- छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह विधिसूत्र है। इससे उदात्त स्वर का विधान है। इस सूत्र में दो पद है - उपोत्तमम् और रिति। वहाँ उपोत्तमम् यह अव्यय है, रिति यह सप्तमी

एकवचनान्त पद है। कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः इस सूत्र से उदात्तः इस प्रथमा एकवचनान्त पद की यहाँ अनुवृति है। उपोत्तमं नाम दो संख्या से अधिक स्वर विशिष्ट पद के अन्त से पूर्व स्वर को कहते है। यहाँ पदों का अन्वय है - रिति उपोत्तमं उदात्तम् इति। रिति इस पद के विशेष्य रूप से प्रत्ययः इस पद का आक्षेप किया है। यहाँ सूत्र का अर्थ है - रित्प्रत्ययान्त के उपोत्तम को उदात्त हो।

उदाहरण- यदाहवनीये।

सूत्र अर्थ का समन्वय- आहवनीये यहाँ पर आ पूर्वक हु धातु से कृत्यल्युटो बहुलम् इस सूत्र से बाहुल के अधिकरण अर्थ में अनीय- प्रत्यय करने पर अनीय-प्रत्ययान्त के रेफ की हलन्त्यम् इस सूत्र से इत्संज्ञा करने पर और तस्य लोपः इस सूत्र से इत्संज्ञक रकार के लोप होने पर आ हु अनीय इस स्थिति में धातु के उकार को गुण ओकार करने पर आ हो अनीय इस स्थिति में यथासंख्यमनुदेशः समानाम् इस परिभाषा के परिष्कृत होने से एचोऽयवायावः इस सूत्र से ओकार के स्थान में अव् यह आदेश होने पर आहव् अनीय इस स्थिति में संयोग होने पर निष्पन्न आहवनीय इस शब्द स्वरूप के कृदन्त होने से वहाँ ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसांङ्योस्सुप् इस सूत्र से इक्कीस स्वादि प्रत्ययों की प्राप्ति में सप्तमी एकवचन की विवक्षा में ङि प्रत्यय करने पर ङि प्रत्यय के आदि ङकार की लशक्वतद्धिते इस सूत्र से इत्संज्ञा और तस्य लोपः इस सूत्र से इत्संज्ञक ङकार के लोप होने पर आहवनीय इ इस स्थित्ति में एकः पूर्वपरयोः इस अधिकार में पढ़े हुए आद्गुणः इस सूत्र से उन अकार और इकार के स्थान में गुण होने पर स्थान आन्तर्य से एकार हुआ सभी का संयोग करने पर आहवनीये यह रूप सिद्ध हुआ। प्रकृत उदाहरण में आहवनीये यह अनीयर्-प्रत्ययान्त पद है, और वह अनीयर्-प्रत्यय रिद् होता है। अतः प्रकृत सूत्र से उस आहवनीये इस पद के अन्त्य से पूर्व एकार को उदात्त करने का विधान है।

पाठगत प्रश्न 12.2

1. 'सावेकाचस्तृतीयादिर्विभक्तिः' यह सूत्र क्या विधान करता है?
2. 'अन्तोदात्तादुत्तरपदादन्यतरस्यमनित्यसमासे' इस सूत्र से किसका विधान है?
3. 'ऊडिदम्पदाद्यपुप्पुम्रैद्युभ्यः' इस सूत्र से किसका विधान है?
4. शस आदि विभक्ति को उदात्त होता है किस सूत्र का अर्थ है?
5. नुम् रहित जो अन्तोदात शतृ प्रत्ययान्त शब्द तदन्त से परे नदी संज्ञक प्रत्यय, तथा अजादि शस् आदि विभक्ति को उदात्त होता है किस सूत्र का अर्थ है?
6. चोदयित्री यहाँ पर ईकार को उदात्त किससे होता है?

पाठ का सार

यहाँ आठवें अध्याय के तीसरे और छठें अध्याय के सूत्रों की आलोचना की है। यहाँ तो वैदिक व्याकरण की चर्चा की है। पाणिनि ने लौकिक व्याकरण करने पर स्वर आदि व्यवस्था की है। परन्तु काल क्रम से स्वर व्यवस्था प्राय लुप्त सी हो गई है। परन्तु आज भी वेद में स्वर की व्यवस्था अत्यधिक दिखाई देता है। पूर्व के दो पाठ में धातुस्वर प्रातिपदिकस्वर और फिट्-स्वर की आलोचना की है। प्रकृत पाठ में प्रत्यय स्वरों की चर्चा की गई है। सामान्य रूप से सभी प्रत्ययों का आदि स्वर उदात्त होता है। आद्युदात्तश्च इस सूत्र से प्रत्यय का आदि स्वर उदात्त होता है। परन्तु सामान्य रूप से सुप्प्रत्यय अनुदात्त होते है। अनुदात्तौ सुप्पितौ इस सूत्र से निर्देश किया है। कुछ विशेष प्रत्ययों के आश्रित त्रिसृभ्यो जसः इत्यादि विशेष सूत्र की रचना सूत्र कर्ता ने की है। उदात्त आदि स्वरों के निषेध के लिए भी कुछ सूत्र पाणिनि के द्वारा कहे गए है। जैसे - दिवो झल् इत्यादी सूत्र है। दिव्-शब्द से परे झलादि विभक्ति को उदात्त निषेध के लिए इस सूत्र की रचना की है। इस प्रकार इस पाठ का मुख्य विषय प्रत्यय स्वर है।

पाठांत प्रश्न

1. 'आद्युदात्तश्च' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
2. 'तद्धितस्य' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
3. 'परमवाघ्वा' इस रूप को सिद्ध कीजिए।
4. 'चोदयित्री' इस रूप को सूत्र सहित सिद्ध कीजिए।
5. 'यज्ञस्य' इस रूप को सिद्ध कीजिए।
6. 'आहवनीये' इस रूप को सिद्ध कीजिए।
7. 'शतुरनुमो नद्यजादी' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
8. 'ङ्याश्छन्दसि बहुलम्' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
9. 'न गोश्वन्सावर्वर्णराडङ्क्रुङ्कृद्भ्यः' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
10. 'कौञ्जायनाः' इस रूप को सूत्र सहित सिद्ध कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

12.1

1. अग्नि शब्द से नि प्रत्यय का विधान 'अङ्गेर्नलोपश्च' इस सूत्र से होता है।

टिप्पणियाँ

2. 'आद्युदात्तश्च' इस सूत्र से प्रत्यय को आद्युदात्त होने का विधान है।
3. अग्नि शब्द में नकार से परे इकार उदात्त होता है।
4. अगि धातु।
5. अनुदात्तौ सुप्पितौ इस सूत्र से।
6. चितः इस सूत्र से।
7. तद्धितस्य यह अधिकार सूत्र है।
8 कितः इस सूत्र से।
9. तिसृभ्यो जसः इस सूत्र से।

12.2

1. उदात्त स्वर।
2. उदात्त स्वर।
3. उदात्त स्वर।
4. अष्टनो दीर्घात् इस सूत्र से।
5. शतुरनुमो नद्यजादी इस सूत्र से।
6. उदात्तयणो हल्पूर्वात् इस सूत्र।।

।। बारहवाँ पाठ समाप्त।।